(ग) न्यूनतम मजदूरी कानून को लागू कर आय के वितरण की विषमता को काफी दूर करती है।

(ङ) मुद्रास्फीति के समय महंगी साख नीति तथा अवसाद या मंदी के समय सस्ती साख नीति को सरकार अर्थव्यवस्था में लागू करती है। समाज कल्याण के भी निवेशकर्ता प्रभावित किये जाते हैं।

इस प्रकार राज्य की विकासात्मक भूमिका को प्रथम चरण का कार्य तथा नियामक भूमिका को द्वितीय चरण के कार्य कहा जाता है जिसे चित्र द्वारा प्रदर्शित कर सकते हैं -

प्रथम चरण : राज्य की विकासात्मक भूमिका

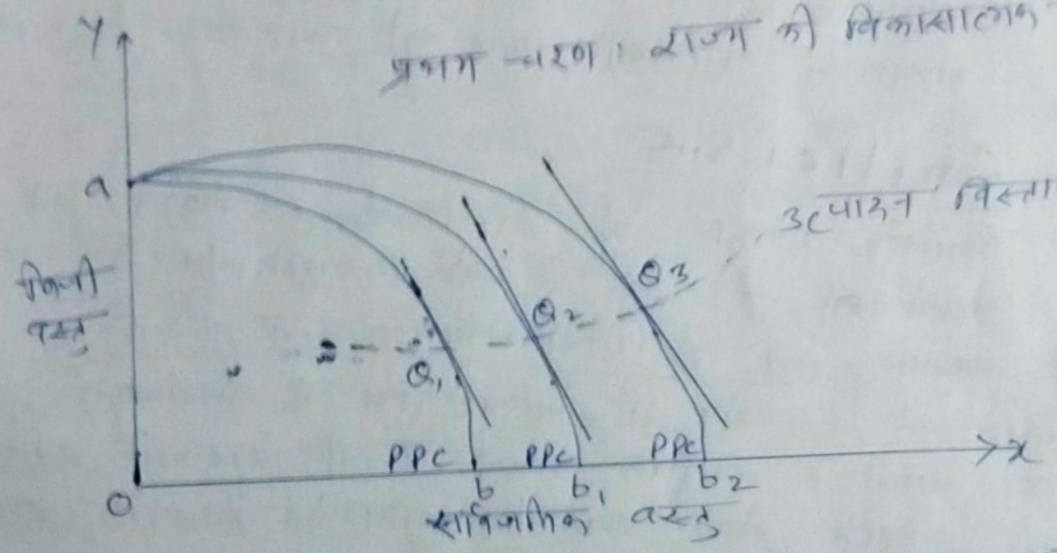

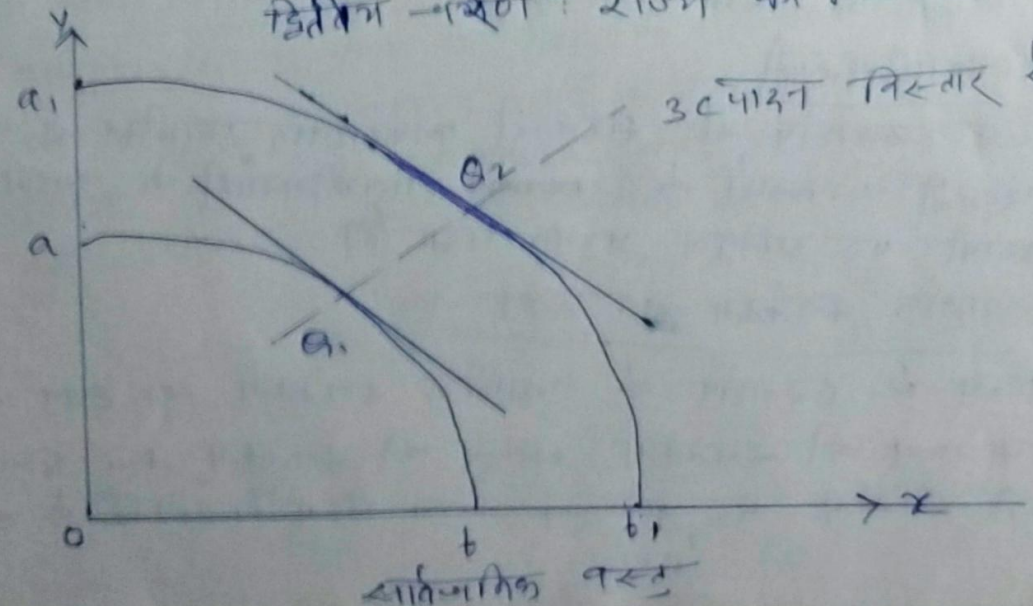

द्वितीय चरण : राज्य की नियामक भूमिका

उपर्युक्त चित्र में प्रथम चरण में आर्थिक विकास गति तीव्र करने के लिए सरकार स्वयं विकासात्मक परियोजनाओं पर अत्यधिक व्यय करेगी ताकि आर्थिक संरचना में वृद्धि हो जाय।

इसी प्रकार द्वितीय चरण में राज्य नियामक भूमिका के माध्यम से निजी क्षेत्र में उत्पादन वृद्धि कराने में समर्थ होगी। इसके फलस्वरूप आर्थिक विकास दर ऊँचा होगा।

इस प्रकार आर्थिक विकास में राज्य की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष भूमिका होती है। विकासात्मक भूमिका राज्य की प्रत्यक्ष भूमिका होती है जबकि नियामक भूमिका राज्य की अप्रत्यक्ष भूमिका होती है

Criticism

आर्थिक विकास में राज्य के हस्तक्षेप की कड़ी आलोचना की गई है जो निम्नलिखित है -

1. बाजार तंत्र में विसंगतियाँ उत्पन्न करना

राज्य के हस्तक्षेप से बाजार तंत्र में विसंगतियाँ उत्पन्न हो जाती है क्योंकि निजी उद्यमी सरकारी हस्तक्षेप से आहत होकर विनियोग घटा देते है। इससे राष्ट्रीय उत्पादन में कमी आती है।

2. लालफीताशाही

राज्य हस्तक्षेप से सरकारी अफसरशाह स्थापित हो जाता है सरकारी अफसरों के लालफीताशाही के कारण निजी उद्यमी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

3. आर्थिक स्वतंत्रता का हनन

राज्य के हस्तक्षेप से आर्थिक स्वतंत्रता का हनन होता है उपभोक्ता की स्वतंत्रता, मजदूर की स्वतंत्रता तथा उत्पादक की स्वतंत्रता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उत्पत्ति के साधनों

की गतिशीलता में बाधा उत्पन्न होता है।

4. **स्वचालित मूल्य तंत्र की समाप्ति**

राज्य के हस्तक्षेप से बाजार तंत्र के द्वारा मूल्य परिवर्तन का संकेत एवं निर्देशन निजी उद्यमी को नहीं मिल पाता है। इसका कारण निर्णय सरकारी निर्णय बन जाता है जो कि लालफीताशाही के दुर्गुण से ग्रसित है।

5. **प्रेरणा का अभाव**

राज्य के हस्तक्षेप करने से आर्थिक व्यवस्था में लाभ प्रवृत्ति रूपी प्रेरणा का अभाव हो जाता है। सभी आर्थिक क्रियाएं सरकारी आदेश का इंतजार करती है।

6. **गुलामी का मार्ग "Road to Serfdom"**

Prof Hayek के अनुसार राज्य की सारी क्रियाएं नियोजन के माध्यम होती है। नियोजन या योजनाकरण अर्थव्यवस्था को गुलामी के मार्ग पर ले जाती है। योजना आयोग ही सभी निर्णय लेगा कि देश में कितना उत्पादन होगा और कैसे वितरण होगा। इसलिए योजना गुलामी का मार्ग है जिसे राज्य हस्तक्षेप से लागू किया जाता है।

7. **निजी विनियोग में बाधा**

राष्ट्रीयकरण के भय से देश के पूंजीपति अपनी पूंजी को देश में लगाना पसन्द नहीं करते। इसके अतिरिक्त विदेशी पूंजी भी हतोत्साहित होती है। फलस्वरूप औद्योगीकरण की गति धीमी रहती है।

—x—

Dr Sandhya Rani
Maharaja College